IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शरतचन्द्र व प्रेमचंद का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रमिला (गाँव व डाकखाना– बुड़ौली, जिला – रेवाड़ी (हरियाणा)

पिन – 123411

स्नातकोत्तर (हिन्दी), UGC – NET

Email – mail2monurohilla@gmail.com

प्रस्तावना :

शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय बांग्ला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एवं लघुकथाकार थे। वे बांग्ला के सबसे लोकप्रिय उपन्यासकार थे। उनकी अधिकांश कृतियों में गांव के लोगों की जीवन शैली, उनके संघर्ष एवं उनके द्वारा झेले गए संकटों का वर्णन है। इसके अलावा उनकी रचनाओं में तत्कालीन बंगाल के सामाजिक जीवन की झलक मिलती है। उनका जन्म हुगली जिले के देवानन्दपुर में हुआ। गरीबी और अभाव में पलने के बावजूद शरत् दिल के आला और स्वभाव के नटखट थे। उनका जन्म 1876 ई॰ में हुआ।

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को उत्तरप्रदेश के वाराणसी के लमही ग्राम में हुआ था। मुंशी प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। बचपन में ही इनकी माता का स्वर्गवास हो गया था। धनपत को बचपन से ही कहानी सुनने का बड़ा शौक था। इसी शौक ने इन्हें महान कहानीकार व उपन्यासकार बना दिया। उन्हें उपन्यास सम्राट के नाम से भी नवाजा गया था। इस नाम से उन्हें सर्वप्रथम बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने संबोधित किया था। प्रेमचंद आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने अपने दौर में रहे हैं, बल्कि किसान जीवन की उनकी पकड़ और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

1. **पारिवारिक परिस्थितियां :–**

क) **दोनों रचनाकारों की समता** :– प्रेमचन्द का जन्म 1880 ई॰ में लमही नामक गांव में हुआ और शरतचन्द्र का जन्म 1876 ई॰ में हुआ। इससे पता चलता है कि दोनों समकालीन है। दोनों ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े रहे है। दोनों का जीवन अभावों में बीता है और संघर्षमय जीवन व्यतीत हुआ है।

ख) **दोनों रचनाकारों की विषमता** :– दोनों का जीवन अभावों में बीतने पर भी दोनों एक जैसे अभाव से ग्रस्त नहीं थे। प्रेमचन्द ने जहां भौतिक दरिद्रता देखी वहीं शरतचन्द्र ने भौतिक की जगह रागात्मक दरिद्रता देखी।

इसी प्रकार शरत को जहां माता का भरपूर प्रेम मिला वहीं पर दूसरी ओर प्रेमचन्द को माता की जगह विमाता की घृणा मिली।

प्रेमचन्द की कर्मभूमि समाज व व्यवस्था को केन्द्र बनाती है। जबकि शरत ने व्यक्ति को केन्द्र बनाया है।

प्रेमचन्द ने ग्रामीण क्षेत्र से जुड़कर किसान व मजदूर दुर्दशा को नजदीक से देखा था।

2. **युगीन परिवेश** :–

उस समय नवजागरण का दूसरा दौर था। जब दोनों लेखक साहित्य में उतरे तो उस समय दो समस्याओं पर मुख्य रूप से बल दिया जा रहा था–स्त्रियों की स्थिति और दलितों की दयनीय स्थिति।

इस नवजागरण का मुख्य बिन्दु हाशिए पर फेके गए समाज को केन्द्र में लाना था। इसके लिए सति प्रथा का विरोध, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि विषयों को उठाया गया।

यह युग जागृति का युग था। शरतचन्द्र पूर्वी भारत से संबंधित होने के कारण चितरंजनदास व सुभाषचन्द्र बोस से प्रभावित थे। उत्तरी भारत से होने के कारण प्रेमचन्द पर गांधी का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

3. **दोनों की रचनाएं :–**

क) **शरत का स्त्री विषयक दृष्टिकोण** :– दोनों ने ही नारी से संबंधित समस्याओं को अपने साहित्य में उठाया है लेकिन दृष्टि व दिशा दोनों की अलग–अलग है। शरत की दृष्टि में नारी परोपकारी व

कल्याण करने वाली है। जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पुरूष को संरक्षण देने को उद्यत रहती है। शरत ने अपने पूरे साहित्य में कुलटा व वेश्या स्त्रियों को महिमामण्डित किया है।

शरत स्त्री को समाज की बंधी बंधाई भूमिका से मुक्त कर अपने नए अधिकार व स्व की रक्षा के लिए लड़ने को उद्यत करते हैं।

ख) **प्रेमचन्द का स्त्री विषयक दृष्टिकोण** :– शरतचन्द्र के ठीक विपरित प्रेमचन्द जी का स्त्री विषयक दृष्टिकोण केवल सतही रहा है। उन्होंने स्त्री को मानवी इकाई के रूप में नहीं देखा बल्कि वर्ग व समाज के रूप में देखा है। प्रेमचन्द का स्त्री विषयक दृष्टिकोण परम्परावादी रहा है। हमारी परम्परा ने पत्नी, पुत्री, मां, गृहिणी के रूप में छवि को जिस ढंग से स्वीकारा है, प्रेमचन्द केवल उसी का अनुपालन करते हैं। गोदान उपन्यास में उच्च शिक्षित स्वतंत्र, आत्मनिर्भर मालती को लेकर प्रेमचन्द असहज दिखाई देते हैं। लेकिन जब मालती अपने स्व का निषेध करके समाज कल्याण में जुटती है और मां की परम्परागत भूमिका ढ़लती है, तभी उसे आदरणीय स्त्री के रूप में प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचन्द की स्त्री अधिकारों के लिए लड़ने के लिए सक्रिय नहीं है बल्कि घुटकर, रोकर, आत्मपीड़ा से ग्रस्त होकर निष्क्रिय पात्र के रूप में उभरती है। इसी कारण प्रेमचन्द के समूचे साहित्य में सिर्फ धनिया याद रहती है जबकि शरत की प्रत्येक स्त्री पाठकों के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ती चलती है।

4. **दलित वर्ग की समस्या संबंधी दृष्टिकोण** :–

शरत और प्रेमचन्द दोनों श्रेष्ठ साहित्यकार की भांति अपने युग की समस्याओं से लड़ते रहे हैं। उन्होंने दलित वर्ग की समस्या का समाधान करने के लिए जमींदार प्रथा के खिलाफ लड़ाई की।

क) दलित समस्या संबंधी प्रेमचन्द का दृष्टिकोण :– प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं का विषय महाजनी समस्या जमींदारी आतंक व किसान मजदूर दुर्दशा आदि को बनाया। गोदान, रंगभूमि, ठाकुर का कुंआ, प्रेमाश्रय इन्हीं विषयों को लेकन लिखी गयी रचनाएं हैं। यहां प्रेमचन्द शरत की तुलना में प्रखर व ओजस्वी लेखक दिखाई देते हैं क्योंकि होरी के रूप में उन्होंने ऋणग्रस्त, दुर्दशा ग्रस्त भारतीय किसान की जीवन्त तस्वीर प्रस्तुत की है।

ख) **शरत का दृष्टिकोण** :– शरतचन्द्र भी अपनी रचनाओं में जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के लिए उद्यत दिखाई देते हैं। उन्होंने पल्ली समाज नामक उपन्यास में जमींदारों की क्रूर कथा का वर्णन किया है। लेकिन इस वर्ग के चित्रण में शरत निश्चत रूप से प्रेमचन्द से पीछे ही रहे हैं। होरी जैसा कोई भी पात्र शरत नहीं दे पाये। इनके लेखन की विशेषता है कि ये लेखन के दौरान भावना में डूब जाते हैं और स्त्रियोचित गुणों से प्रभावित समस्या को उभारते हैं।

शरत ने दलित समस्या को लेकर कोई स्वतंत्र रूप से रचना नहीं की है।

निष्कर्ष :–

कुल मिलाकर दोनों अपने युग की संवेदना को समझने, ग्रहण करने और व्यक्त करने में अग्रणी रहे हैं। शरत का झुकाव स्त्री वर्ग की दुर्दशा व उनकी मानसिकता को उद्‌घाटन करना था और प्रेमचन्द का झुकाव कृषक संप्रदाय की आर्थिक, सामाजिक दशा के उद्‌घाटन में रहा है। शरत की रचनाओं में क्रांतिकारियों की घटनाएं विद्यमान है। पथ के दावेदार को क्रांति की गीता कहा जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

- रामविलाश शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, सं॰ 1967
- रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली सं॰ 1994
- नन्ददुलारे वाजपेयी, प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन, 1956
- शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय (हिन्दी) भारतीय साहित्य संग्रह (अभिगमन तिथि : 13 सितम्बर, 20101
- "संवेदनशील अमर रचनाकार शरतचन्द्र (एचटीएम), वेब दुनिया।